

‘जगद्गुरु षंकराचार्य’ नामक अपने दूसरे उपन्यास में उन्होंने भारत को विष्व के पटल पर वहीं स्थान दिलाने का प्रयास किया जो उसे वैदिक युग में प्राप्त था। उन्होंने लिखा—

“प्राणी अपने हितों की चिन्ता करता है, लेकिन मनुष्य पूरे समाज की चिन्ता करता है। प्रकृति, धर्म और संस्कृति सबको जोड़कर एक अखंड भारत का दर्शन कराती है।”

